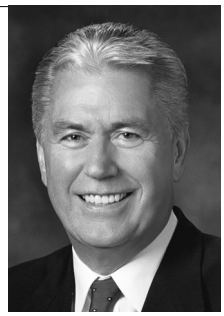

अध्यक्ष टिएटर एफ. उक्टॉफ
प्रथम अध्यक्षता में दितीये सलाहकार

हवाई गडबड़ी में सुरक्षापूर्वक उतरना

अधिक समय पहले नहीं मेरी पत्नी, हेरियट, और मैं एक हवाई अडडे में एक हवाई जहाज का अदभूत तरह से उतरना देख रहे थें । वह एक तूफानी दिन था, और हवाई जहाज के विरोध में भयानक हवाएं तेजी से चल रही थी, उतरने के दौरान सभी को विचलित कर और कंपाने का कारण होती है ।

जैसे हम इस प्रकृति और मशीन के बीच के संर्घष को देख रहे थें, मेरा दिमाग अपनी स्वय की हवाई प्रशिक्षण और नियमों की ओर मोड़ा जहां मैंने सीखा था— और बाद में दूसरे पाईलटों को प्रशिक्षण में सीखाया था ।

"हवाई गड़बड़ी के दौरान निंयत्रणों से न लड़े," मैं उन्हें हमेशा से कहता आया था । "शांत रहें; ज्यादा उतेजित न हो । अपनी निगाहों को रनवे की मध्य रेखा पर केन्द्रीत कर रखे । यदि आपकी इच्छानुसार पहुंचने के मार्ग से ध्यान भटकता है, प्रेरित रहें परन्तु सुधारने का मापतोल करें । अपने हवाई जहाज की संभावना पर भरोसा करें । हवाई गड़बड़ी से बाहर लाएं ।"

अनुभवी पाईलेट समझते हैं कि वे हमेशा जो उनके चारों ओर होने वाली गतिविधियों पर निंयत्रण नहीं कर सकते हैं । वे हवाई गड़बड़ी को युं ही नहीं बंद कर सकते हैं । वे बारिष या हिम को गायब नहीं कर सकते हैं । वे वायु के बाहव के कारण को थाम या उसके दिशा को बदल नहीं सकते हैं ।

परन्तु वे यह भी समझते हैं कि हवाई गड़बड़ी या तीव्र वायु से भयभीत होना गलत होगा– और विशेषकर जो उनके द्वारा रोक दी जाती हैं । सुरक्षापूर्वक उतरने का रास्ता है जब परिस्थितियां उम्मीद से कम हो सही रास्ते पर रुकने पर और फिसलने का रास्ता सम्भवता से अधिक पूर्ण रुप से हो ।

जैसे मैं एक के बाद एक हवाई जहाज को जो अपनी अन्तिम पहुंच पर उतरने पर थे देखा रहा था और अपने वर्षोपूर्व नियमों को याद किया जिसे सीखा था जब मैं एक पाईलट था, मैं अचभित होता हूं कि इस में हमारे दैनिक जीवन के लिये कोई पाठ नहीं है ।

हम हमेशा तूफानों को रोक नहीं सकते हैं जिसे जिन्दगी हमारे रास्ते में लाती है । कभी कभी बाते हमारे रास्ते से सधारणता से युं ही नहीं चली जाती है । हम निराशा,शंका,भय,दुख से, या तनाव द्वारा आये गड़बड़ी से कपांने और आघात होना महसूस कर करते हैं ।

उन दिनों के दौरान, इन सब बातों में उलझना आसान होता है जोकि गलत होती और हमारे विचारो को केन्द्रति कर हमें परेशान करती थी । लालच परेशानीओ पर ध्यान लगाता है हम जिसका समाना कर रहे होते है बजाए उद्धारकर्ता पर और हमारी सच्ची गवाही के ।

लेकिन यह अपने जीवन की चुनौतियों द्वारा संचालन करने का बहेतर तरीका नहीं होता है ।

वैसे ही जैसे एक पाईलट का अनुभव उस तुफान पर नहीं ध्यान लगाने देता परन्तु रानवे के मध्य पर और सही जमीन के छुने के बिंदू पर होता है, तो हमें भी वैसे ही हमारा ध्यान भी अपने विश्वास–हमारे उद्धारकर्ता,उसके सुसमाचार, और हमारे स्वर्गीय पिता की योजना पर – और हमारे अन्तिम उदेश्य पर–सुरक्षापूर्वक अपने स्वर्गीय मंज़ील पर वापस लौटने पर केन्द्रीत कर रखना चाहिये । हमें परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए और अपने परिश्रमों से शिष्यता के मार्ग पर ध्यान लगाएं रहना होगा । हमें अपनी आखें,हृदय,और मन को जीवन के तरीकों पर रखना चाहिये हमें जानते पर केन्द्रीत करना चाहिये ।

अपने स्वर्गीय पिता में विश्वास और भरोसा कर खुशी से उनकी आज्ञाओ का पालन कर हमारे लिये आनंद और महिमा को लाता को दर्शाएंगा हैं । और यदि हम पथ पर बने रहते हैं, हम किसी भी परेशानी से बाहर आ जाएगें –कोई बात नहीं यह कितनी भी जठील क्यु न हो –और अपने स्वर्गीय घर में सुरक्षापूर्वक लौटेगें ।

जहां हमारे आस पास के बादल कितने भी साफ हो या भयानक घटा

से भरे हो,यीशु मसीह के शिष्यों के रुप में, हम पहले प्रभु के राज्य और उसके धर्म की खोज करेंगे,यह जानते हुए यदि हम ऐसा करते है, अखिरकार जो कुछ हम चाहेंगे हमें दिया जाएगा (देखें मत्ती 6:33)।

जीवन का एक कितना महत्वपूर्ण सबक है!

जितना अधिक हम हमारी कठिनाईयां, हमारे संर्घष,हमारे शंकाओं,और हमारे डर के प्रति परेशान होते हैं, और भी अधिक कठिनाईयां आ सकती है । लेकिन हम और भी अधिक हमारे स्वर्गीय मंजिल की ओर ध्यान लगाते हैं और प्रसन्नता पूर्वक शिष्यता के मार्ग का अनुसरण कर—परमेश्वर से प्रेम कर, अपने पडोसी की सेवा कर—हम और भी अधिक कठिनाई और परेशानी के समयों में सफलतापूर्वक संचलान करने के द्वारा ऐसा करते हैं ।

प्रिये दोस्तों,कोई बात नहीं हमारे चारो ओर नाशवर अस्तित्व की आंधी की चीख कितनी भी जटिल क्युं न हो, यीशु मसीह का सुसमाचार हमेशा हमारे स्वर्गीय पिता के राज्य में पहुंचने का सुरक्षित मार्ग होगा ।

इस संदेश से शिक्षा

अध्यक्ष उक्टॉफ ने हमें सलाह दी ''परमेश्वर पर भरोसा करें और शिष्यता के मार्ग पर आङिग बने रहने का अपने प्रयास पर ध्यान लगाएं रहें ।'' जिन्हें आप शिक्षा देते हो से पुछे कि वे ''अपने स्वर्गीय मंजिल की ओर और प्रसन्नता पूर्वक शिष्यता के मार्ग का अनुसरण करते हुए'' उन समयों में जब वे परेशानियों से जूझ रहें हो आङिग कैसे रहेगें । चर्ता णह्डड्डद ह्वतह्विदठ दड्डठण दत दड्डह्वत्ह्व तठ्ठ्जीथ दड्डजद दड्डठी ट्टजत ड्डतट्टथि तत दड्डठह्वज्ञ दठथदह्वणतती जत्ड्ड तत ॐड्डज्ञह्वथद ह्वत ट्ठह्वड्डठह्वट्टण्दि णतणठत्दथ जत्ड्ड दत ळज्ञजीठज्ञट्ठण्णि ड्ठठट्टह्वड्ठठ ड्डतृ दत ह्वणळण्ठणठत्द तत्ठ तज्ञ णतज्ञठ तठ्ठ दड्डतथठ ह्वड्ठठजथ ह्वत दड्डठह्वज्ञ ण्ह्वठिथ. आप उन्हें आंमत्रित कर तरीकों को सोचने दे जिसपर वे अपनी गवाही और कठिन क्षणों में मसीह पर ध्यान केन्द्रीत कर और प्रार्थनापूर्वक निर्णय कर कैसे वे एक या अधिक तरीको को जीवन में लागू कर सकते हैं को विचारने दें ।

युवा

अपनी गवाही के लिये एक नींव

जेनिफर विवर द्वारा

जब मैं 16 वर्ष की थी, एक मित्र प्रचारकों के साथ हमारे घर आई थी । महीनेभर के अन्दर पहली चर्चा के दौरान, मेरे सभी प्रश्नों का जवाब सपष्टता से मिल गया था मैंने पवित्र आत्मा की पुनःस्थापना के सच्चे संदेश के विषय की गवाही को महसूस किया था । यह असामान्य बात थी मैंने पहले ऐसा कभी भी महसूस नहीं किया था, और मैं जानती थी कि यह सब सच है ।

इसलिए, मैंने अधिक नाकरता और विरोध को पहले से कहीं ज्यादा अनुभव किया था । मैं अकेली, थकी, और भ्रमित होने के एहसास को महसूस किया था । यदि मैं सही कर रही थी, क्यों मैं इतना अधिक विपत्ति का समान कर रही थी ? मैं समझ नहीं पा रही थी कैसे मेरे परिक्षाएं मेरे लिये अच्छी हो सकती है । प्रचारकों ने मुझे उपवास और प्रार्थना करना सीखाया था, यहां तक स्कूल के दिनों के भीतर भी । जब बातें असहन योग्य हो गई मैंने अपना हृदय खोल दिया और तुरन्त ही आत्मा की सांत्वना को महसूस किया ।

बपतिस्मा लेनेवाला मेरा सप्ताह पूरी तरह से परिक्षाओं से भरा था । मेरे बॉस ने मुझे नौकारी से निकल देने की धमकी दी यदि मैंने किसी के लिये अपने बपतिस्मे को छोड़ा नहीं तो, मैं रासोलि के साथ अस्पताल में थी, और मेरे अभिभावकों ने मुझे घर से चले जाने को कहा था । बहुत से बातें मेरे नियंत्रण से बाहर थी, मैं सिर्फ एक ही काम प्रभु के ओर लौटना कर सकती थी । वह सारी परिक्षाएं मेरे लिये फायदे में बदल गई थी । उन्होंने मेरी सहायता सुसमाचार के सिद्धान्तों के बारे में सीखने में की, जिस ने मेरी गवाही को नींव प्रदान की हुई थी ।

लेखिका सयुंक्त राष्ट्र,आडोहा में रहती है ।

© 2015 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/15 । अनुवाद अनुमतिः 6/15 । *First Presidency Message, February 2016* का अनुवाद । Hindi । 12862 294

विवाह परमेश्वर की ओर से नियुक्त किया गया है

प्रार्थनापूर्वक इस सामग्री का अध्ययन करें और क्या बाँटना है को खोजें। "परिवार को कैसे समझ पाएंगें : संसार को एक घोषणा'' परमेश्वर में आप का विश्वास बढ़ाता है और उनको आशीषित करता है जिन से आप भेंट करने जाते हैं ? अधिक जानकारी के लिये, जाएं (अधिक जानकारी के लिए, reliefsociety.lds.org को देखें।

विश्वास, परिवार, सहायता

भविष्यवाक्ताओं, प्ररितों, और मार्गदर्शक लगातार सत्यनिष्ठा से घोषणा करते हैं कि विवाह परमेश्वर की ओर से एक पुरुष और एक स्त्री के बीच में नियुक्त किया गया है और कि परिवार सृष्टिकर्ता की योजना का केन्द्र है।[1]

एलडर डी. डोड क्रस्टोफरसन बारह प्ररितो के परिषद के ने कहा थाः "एक परिवार एक पुरुष और स्त्री के विवाह पर परमेश्वर की योजना की उत्तम स्थापना को बनने का एक प्रयत्न है। ...

"... ना ही हम ना ही कोई और नाशवरता में इस विवाह के पवित्र आदेश को बदल सकता है।''[2]

बोनि एल. ओस्करसन, युवतियों की जनरल अध्यक्षता, ने कहा : प्रत्येक, कोई बात नहीं उनकी विवाह की कोई भी परिस्थियों क्यों न हो या बच्चों की गिनती, प्रभु की परिवार की घोषण की योजन के वर्णन का समर्थक कर सकते हैं। "यदि यह प्रभु की योजना है, यह हमारी भी योजना होनी चाहिये!"[3]

एलडर क्रिस्टोफरसन ज़ारी रखते हैः आप में से कुछ कई कारणों से विवाह की आशीष को नाकारते है शामिल है दृष्टिकोण की आभाव से, सामान्य लिंग आर्कषण, शारीरीक या मानसिक दोष, या सरलता से असफल होना। ... या आप शायद शादीशुदा हो,परन्तु वह शादी खत्म हो गई हो। ... आप में से कुछ जो शादीशुदा है पर बच्चे पैदा नहीं कर सकते हो। ...

यहां तक की, ... हर कोई हर वंश में पवित्र योजना का विकास करने में योग्यदान कर सकता है।''[4]

अतिरिक्त धर्मशास्त्र

उतपत्ति 2:18–24 ; 1 कुरिन्थियों 11:11; सिद्धान्त और अनुबन्ध 49:15–17

सजीव कहानियां

भाई लेरी एम. गिब्सन, पुर्व युवा पुरुषों के जनरल अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार, ने समरण किया जब शरलि, अब उनकी पत्नी है ने, कहा :

"'मैं तुम से प्रेम करती हूं क्योंकि मैं जानती हूं कि तुम मुझ से प्रेम करने से कही अधिक प्रभु से प्रेम करते हो।' ...

"वह जवाब मेरे हृदय में उत्तर गया। ...

"...[और] मैं चाहता हूं कि वह हमेशा उसे महसूस करे कि मैं प्रभु को सबों से ज्यादा प्रेम करता हूं।''[5]

एलडर डेविट ए. बॅटनर बारह प्रेरितों के परिषद के सीखया थाः प्रभु यीशु मसीह का केन्द्रीये बिंदू अनुबंधित विवाह के रिश्ते में है। ... [उसकी कल्पना करे] उद्धारकर्ता ने [एक] त्रिकोण के शिखर पर पद दिया,एक स्त्री को एक कोना का मूल और एक पुरुष को अन्य कोना का मूल दिया है। अब विचारे आदमी और औरत के बीच के रिश्ते में क्या होता है जैसे वे व्यक्तितगत तौर पर और लगातार 'मसीह के पास आने का' और 'उस में पूर्ण होने का' प्रयत्न करते हैं (मरोनी 10:32)। मुक्तिदाता के द्वारा और कारण, पुरुष और स्त्री एक साथ निकट आते है।''[6]

विवरण

1. "परिवार : संसार को एक घोषण,'' लियाहोना, नव. 2010, 129।
2. डी. डोड क्रिस्टोफरसन, क्यों विवाह,'' क्यों परिवार,'' लियाहोना, मई 2015, 52।
3. बोनी एल. ओस्करसन, ''परिवार घोषणा को बचावकर्ता '' लियाहोना, मई 2015, 15।
4. डी. डोड क्रिस्टोफरसन, ''क्यों विवाह, क्यों परिवार,'' 52।
5. लेरी एम. गिब्सन,"Fulfilling Our Eternal Destiny," Ensign, Feb. 2015, 21–22.
6. डेविड ए. बॅटनर, ''विवाह उसकी अनन्त योजना में विशेष है,'' लियाहोना, जून 2006, 54।

इसे विचारे

मैं कैसे व्यक्तितगत तौर पर और लगातार ''मसीह के पास आने का'' प्रयत्न करता हूं ?

© 2016 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित। भारत में छपी। अंग्रेजी अनुमतिः 6/15। अनुवाद अनुमतिः 6/15। *Visiting Teaching Message, February 2016* का अनुवाद। Hindi। 12862 294